ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XII, Special Issues–I

March – April 2025

Original Research Article

नई शिक्षा नीति 2020 में कौशल आधारित शिक्षा का स्थान एवं महत्व

*आरती सिंह और **डॉ. मौसमी परिहार

*शोधार्थी हिंदी विभाग रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, (म.प्र)
**निर्देशिका सह आचार्या हिंदी विभाग रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

सारांश :

नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन लाने हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से हटकर कौशल आधारित शिक्षा को अधिक प्रोत्साहित करती है, जिससे विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान और रोजगारपरक क्षमता विकसित करने में सहायता मिले। इस शोध पत्र में नई शिक्षा नीति में कौशल आधारित शिक्षा के महत्व, उसकी कार्यान्वयन रणनीतियों और प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ–साथ आवश्यक कौशल प्रदान करना है, जिससे वह आधुनिक अर्थव्यवस्था में सफल हो सकें। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में अधिकतर ध्यान सैद्धांतिक ज्ञान पर दिया जाता था, जिससे विद्यार्थी व्यावसायिक रूप से तैयार नहीं हो पाए थे। नई शिक्षा नीति 2020 इस चुनौती का समाधान करने हेतु कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल देती है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial Use Provided the Original Author and Source Are Credited.

प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है, जो न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि व्यक्तियों को सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होती है। भारत में शिक्षा प्रणाली लंबे समय तक सैद्धांतिक ज्ञान पर केंद्रित रही, जिससे व्यावहारिक और कौशल आधारित शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं मिल सका। बदलते वैश्विक परिदृश्य और आधुनिक अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को देखते हुए, भारत सरकार ने 2020 में एक नई शिक्षा नीति प्रस्तुत की। यह नीति शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और कौशल केंद्रित बनाने का प्रयास करती है। इस शोध पत्र में नई शिक्षा नीति में कौशल आधारित शिक्षा के महत्व, उसकी कार्यान्वयन रणनीतियों और प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

शोध प्रविधि – तुलनात्मक विधि विश्लेषण विधि

बीज शब्द *– कौशल आधारित शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, व्यावहारिक प्रशिक्षण, इंटर्नशिप कार्यक्रम, प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, रोजगारोन्मुख शिक्षा, डिजिटल टूल्स व*

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XII, Special Issues–I

March – April 2025

Original Research Article

नवाचार, आत्मनिर्भरता।

कौशल आधारित शिक्षा का स्थान और महत्व:

आज की तेजी से विकसित होती दुनिया में, कौशल आधारित शिक्षा व्यक्तियों के लिए उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफल होने के लिए महत्वपूर्ण हो गई है। जैसा की पारंपरिक शिक्षा सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है, कौशल आधारित शिक्षा व्यक्तियों को व्यावहारिक कौशल से लैस करती है जो वास्तविक दुनिया से परिदृश्यों से सीधे लागू होते हैं। कौशल आधारित शिक्षा पारंपरिक शैक्षणिक दृष्टिकोणों की तुलना में कई लाभ प्रदान करती है। व्यावहारिक कौशल पर जोर देकर, यह व्यक्तियों को कई तरह की योग्यताएं विकसित करने में सक्षम बनाता है, जिनकी नियोक्ताओं द्वारा अत्यधिक माँग की जाती है और जो जीवन के विभिन्न पहलुओं में मूल्यवान है ।

1. **स्कूली शिक्षा में कौशल विकास**

नई शिक्षा नीति के अनुसार, शिक्षा प्रणाली को पारंपरिक रटने की प्रवृत्ति से मुक्त करके अधिक व्यावहारिक, अनुभवात्मक(Experiential),और रोजगारोन्मुख बनाया गया है। कौशल विकास में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक एकीकृत किया गया है। जैसे–जैसे दुनिया आगे बढ़ रही है, शिक्षा प्रणाली से अपेक्षाएँ भी बढ़ रही है। इस संदर्भ में, स्कूलों में कौशल विकास कार्यक्रम छात्रों को आगे आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 में कक्षा 6 से ही छात्रों को व्यवसायिक शिक्षा देने की बात कही गई है। इसके लिए निम्नलिखित की गई है–

- **व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत–**

व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को व्यवहारिक, रोजगारपरक और जीवनोपयोगी कौशल प्रदान करना है जिससे वह अपने जीवन में आत्मनिर्भर बन सके और रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सके नई शिक्षा नीति 2020 में इस मुख्य धारा की शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया गया है।

- **इंटर्नशिप और व्यावहारिक प्रशिक्षण**

इंटर्नशिप का उद्देश्य छात्रों को वास्तविक जीवन के कार्यों से जोड़ना है जिससे वह सिखाते हुए अनुभव प्राप्त करें और अपने कौशल को व्यावसायिक वातावरण में आजमा सकें।

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XII, Special Issues–I

March – April 2025

Original Research Article

कक्षा 6 से शुरू–

- छात्रों को कक्षा 6 से ही 10 दिवसीय इंटर्नशिप कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिलेगा।
- यह इंटर्नशिप स्थानीय शिल्पकारों, कारीगरों, व्यापारियों या छोटे उद्यमों के साथ होगी।

व्यावसायिक क्षेत्र के उदाहरण:

- बढ़ई गिरी (Carpentry)
- धातु कार्य (Metal work)
- कढ़ाई बुनाई
- बागवानी (Horticulture)
- रसोई और पाक कला
- डिजिटलीकरण और कंप्यूटर मरम्मत

2. व्यावहारिक प्रशिक्षण :

व्यावहारिक प्रशिक्षण का उद्देश्य छात्रों को थ्योरी के साथ–साथ "हाथ से करने" (learning by doing) की प्रक्रिया से जोड़ना है।

मुख्य विशेषताएं

- **प्रोजेक्ट आधारित सीखना:** छात्रों को समूह में कार्य देकर वास्तविक समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- **कौशल प्रयोगशालाएँ:** स्कूलों में कार्यशालाओं और लैब्स के माध्यम से वास्तविक उपकरणों और सामग्रियों के साथ प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- **डिजिटल टूल्स का उपयोग:** जैसे कोडिंग, रोबोटिक्स, एआर/वीआर टेक्नोलॉजी से व्यावहारिक सीख को मजेदार और आधुनिक बनाया जाएगा।

3. उच्च शिक्षा में कौशल विकास :

- **बहुविषेक शिक्षा और फ्लेक्सिबल करिकुलम**– अब छात्र एक ही डिग्री के दौरान अलग–अलग कौशल आधारित कोर्स कर सकते हैं।वह कंप्यूटर साइंस, डिजाइनिंग, मार्केटिंग, डेटा साइंस, जैसे रोजगारपरक विषय को चुन सकते हैं।

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XII, Special Issues–I

March – April 2025

Original Research Article

● **मल्टी एंटो और मल्टी एग्जिट सिस्टम**– यदि कोई छात्र अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ना चाहता है, तो उसे पूरा नुकसान नहीं उठाना पड़ेगा। 1 साल बाद सर्टिफिकेट, 2 साल के बाद डिप्लोमा और तीन–चार साल के बाद डिग्री प्राप्त करने का विकल्प होगा। इससे छात्र अपनी आवश्यकताओं और रुचि के अनुसार पढ़ाई को जारी या बंद कर सकते हैं।

● **अकादमिक बैंक ऑफ क्रडिट (ABC) प्रणाली**– यह डिजिटल स्टोरेज सिस्टम है, जिसमें छात्रों द्वारा किए गए कोर्स के क्रेडिट जमा किए जाएँगे। भविष्य में छात्र इन क्रेडिट्स को किसी अन्य विश्वविद्यालय या कोर्स में इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे छात्र की शैक्षणिक यात्रा अधिक लचीली और व्यक्तिगत बन जाती है।

4. तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा (TVET) का विस्तार :

देश के विकास में उसे देश की शैक्षिक व्यवस्था का बहुत अत्यधिक महत्व होता है और अगर उस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय दिलाना और उनको जीविकोपार्जन योग्य बनाना हो तो उसे देश का विकास निश्चित होता है। शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति तभी कर सकती है जब वह शिक्षा तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा हो। वर्तमान में शिक्षा की घटती गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए जरूरी है कि शिक्षा का पूर्णतः तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा में परिवर्तन किया जाए। तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को व्यवसाय चुनने में ही सहायक नहीं है, अपितु इसके द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास भी किया जाता है। आधुनिक युग में बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि शिक्षा को छात्रों के अनुरूप बनाया जाए जिससे वह अपने वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए तकनीकी शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। कुशल लोग बेरोजगार नहीं हो सकते। यदि वह अपना खुद का व्यवसाय शुरू करते हैं, तो वे अन्य शिक्षित लोगों को नौकरी के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा बेरोजगारी की समस्या को कम करने में मदद करती है। तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा किसी देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निर्माण के हर क्षेत्र में तकनीशियनों की जरूरत होती है। तकनीकी शिक्षा निर्विवाद रूप से राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को बढ़ावा देती है। तकनीकी एवं व्यावसायिक के कई लाभ होते हैं।

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XII, Special Issues–I March – April 2025

Original Research Article

उपसंहार : नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत इंटर्नशिप, कौशल विकास व्यावसायिक शिक्षा और अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट जैसे प्रावधान भारत के शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी परिवर्तन का संकेत है। इन बदलावों का उद्देश्य केवल पस्ताकिया ज्ञान तक सीमित न रहकर छात्रों को व्यवहारिक, रोजगारोन्मुखी और जीवनोपयोगी शिक्षा देना है। इंटर्नशिप और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से छात्र वास्तविक दुनिया की आवश्यकताओं को समझते हैं और अपने कौशल में निखार लाते हैं। व्यावसायिक शिक्षा से उन्हें स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में मार्गदर्शन मिलता है, जबकि अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट उन्हें लचीली और व्यक्तिगत शिक्षा यात्रा का अवसर प्रदान करता है। यह समग्र दृष्टिकोण शिक्षा को समावेशी, लचीली और नवाचार पूर्ण बनाता है, जो छात्रों को न केवल रोजगार पाने योग्य बनाता है बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और सशक्त नागरिक के रूप में भी तैयार करता है। नई शिक्षा नीति के यह पहलू भारत को "ज्ञान आधारित समाज" की ओर ले जाने में मील का पत्थर साबित होंगे।

संदर्भ सूची:

1. *नई शिक्षा नीति 2020 (national education policy 2020)– भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD)*
2. *Academic Bank of credit (ABC) portal*
3. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रारूप –प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार*
4. *यूजीसी(UGC) दिशा निर्देश: स्किल डेवलपमेंट और इंटर्नशिप*
5. *एनसीईआरटी (NCERT) और एनसीवीटी(NCVT) की रिपोर्ट्स –स्कूली और व्यावसायिक शिक्षा पर आधारित*
6. *नीति आयोग की रिपोर्ट–"Skilling India: The Road Ahead"*
7. *अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद(AICTE)इंटर्नशिप पोर्टल और गाइडलाइंस*
8. *Times of India, The Hindu, Indian express–शिक्षा नीति पर आधारित समाचार और लेख*

Cite This Article:

सिंह आ. और डॉ. परिहार मौ. **(2025).** *नई शिक्षा नीति 2020 में कौशल आधारित शिक्षा का स्थान एवं महत्व.* **In Educreator Research Journal: Vol. XII (Issue II),** pp. 253–257.

Doi: *https://doi.org/10.5281/zenodo.15706092*